IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double- Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 4, July 2026
Impact Factor: 8.2

हाई स्कूल के छात्रों की रुचि के क्षेत्रों पर सामाजिक मनोवैज्ञानिक चरों का प्रभाव

मिथिलेश कुमार[1], डॉ. भूपेंद्र सिंह चौहान[2]
[1]शोधार्थी, [2]प्रोफेसर
शिक्षाशास्त्र -विभाग
विक्रांत विश्वविद्यालय, ग्वालियर, म.प्र

सारांश: *किशोरावस्था जीवन का एक महत्वपूर्ण विकासात्मक चरण है, जिसमें विद्यार्थियों की रुचियों, अभिरुचियों, आकांक्षाओं तथा व्यक्तित्व का तीव्र विकास होता है। हाई स्कूल स्तर के छात्र सामान्यतः 14 से 18 वर्ष की आयु वर्ग के होते हैं और इस अवधि में उनके शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा मनोरंजन संबंधी रुचि क्षेत्रों का निर्माण अनेक सामाजिक-मनोवैज्ञानिक चरों से प्रभावित होता है। पारिवारिक वातावरण, विद्यालयी वातावरण, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, सहपाठी समूह, आत्म-अवधारणा, आत्म-प्रभावकारिता, अभिप्रेरणा, व्यक्तित्व, भावनात्मक समायोजन तथा सामाजिक समर्थन जैसे कारक विद्यार्थियों की रुचियों की दिशा और तीव्रता को प्रभावित करते हैं।*

प्रस्तुत समीक्षा अध्ययन का उद्देश्य उपलब्ध साहित्य के आधार पर हाई स्कूल के छात्रों की रुचि के विभिन्न क्षेत्रों तथा उन पर प्रभाव डालने वाले प्रमुख सामाजिक-मनोवैज्ञानिक चरों का विश्लेषण करना है। समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि सकारात्मक पारिवारिक और विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों में शैक्षिक एवं रचनात्मक रुचियों को बढ़ावा देता है, जबकि नकारात्मक सामाजिक दबाव, निम्न आत्मसम्मान तथा प्रतिकूल सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियाँ रुचियों के विकास को सीमित कर सकती हैं।

मुख्य संकेतक: हाई स्कूल छात्र, रुचि क्षेत्र, सामाजिक-मनोवैज्ञानिक चर, पारिवारिक वातावरण, विद्यालयी वातावरण, आत्म-अवधारणा, अभिप्रेरणा, सहपाठी समूह।

I. परिचय

शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य केवल विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि उनके व्यक्तित्व, क्षमताओं, अभिरुचियों और जीवन संबंधी आकांक्षाओं का समग्र विकास करना भी है। प्रत्येक विद्यार्थी की रुचियाँ भिन्न होती हैं और यही रुचियाँ उसके शैक्षिक प्रदर्शन, विषय चयन, करियर निर्णय तथा सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करती हैं। हाई स्कूल स्तर विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी अवस्था में विद्यार्थी भविष्य के शैक्षिक एवं व्यावसायिक विकल्पों के प्रति गंभीरता से विचार करना प्रारंभ करते हैं।

रुचि को सामान्यतः किसी विशेष गतिविधि, विषय, वस्तु या अनुभव के प्रति व्यक्ति की स्थायी अथवा अपेक्षाकृत स्थायी आकर्षण प्रवृत्ति के रूप में समझा जाता है। व्यक्तियों की रुचियाँ उनके व्यक्तित्व और कार्य वातावरण के बीच संबंध स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसी प्रकार सामाजिक-संज्ञानात्मक दृष्टिकोण के अनुसार व्यक्ति की रुचियाँ उसकी आत्म-प्रभावकारिता, अपेक्षित परिणामों और सामाजिक अनुभवों से प्रभावित होती हैं (लेंट और अन्य, 1994)।

हाई स्कूल के विद्यार्थियों की रुचियों का विकास केवल व्यक्तिगत क्षमता या बुद्धि पर निर्भर नहीं होता। परिवार, विद्यालय, मित्र समूह, सामाजिक प्रतिष्ठा, आर्थिक संसाधन और सांस्कृतिक मूल्य भी उनकी रुचियों को आकार देते हैं। सामाजिक-मनोवैज्ञानिक चर विद्यार्थियों के विचारों, भावनाओं, आत्म-धारणा तथा व्यवहार को प्रभावित करते हैं। इसलिए छात्रों की रुचि के क्षेत्रों को समझने के लिए सामाजिक और मनोवैज्ञानिक दोनों प्रकार के कारकों का संयुक्त अध्ययन आवश्यक है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double- Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 4, July 2026
Impact Factor: 8.2

II. रुचि की अवधारणा

रुचि व्यक्ति की उस मानसिक प्रवृत्ति को दर्शाती है जिसके कारण वह किसी विशेष वस्तु, विषय या गतिविधि की ओर आकर्षित होता है। रुचि में आनंद, जिज्ञासा, संलग्नता और निरंतरता के तत्व सम्मिलित होते हैं। रुचि के विकास को एक गतिशील प्रक्रिया माना, जिसमें परिस्थितिजन्य रुचि धीरे-धीरे व्यक्तिगत एवं स्थायी रुचि में परिवर्तित हो सकती है।

विद्यार्थियों की रुचि निम्नलिखित क्षेत्रों में देखी जा सकती है—

1. शैक्षिक एवं विषयगत रुचि
2. वैज्ञानिक एवं तकनीकी रुचि
3. साहित्यिक एवं कलात्मक रुचि
4. खेलकूद संबंधी रुचि
5. सामाजिक एवं सामुदायिक रुचि
6. व्यावसायिक एवं करियर संबंधी रुचि
7. संगीत एवं सांस्कृतिक रुचि
8. डिजिटल एवं तकनीकी गतिविधियों में रुचि
9. नेतृत्व एवं संगठनात्मक गतिविधियों में रुचि

इन रुचियों का विकास व्यक्तिगत अनुभवों और सामाजिक परिवेश की अंतःक्रिया के परिणामस्वरूप होता है।

सामाजिक-मनोवैज्ञानिक चरों की अवधारणा

सामाजिक-मनोवैज्ञानिक चर वे कारक हैं जो व्यक्ति के सामाजिक परिवेश तथा मानसिक प्रक्रियाओं के बीच संबंध स्थापित करते हैं। इनमें सामाजिक संबंध, परिवार, विद्यालय, मित्र समूह, सामाजिक समर्थन, आत्मसम्मान, आत्म-अवधारणा, अभिप्रेरणा और व्यक्तित्व जैसी विशेषताएँ शामिल होती हैं।

किशोरावस्था में व्यक्ति अपनी पहचान विकसित करता है और सामाजिक स्वीकृति उसके लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। मनोसामाजिक विकास सिद्धांत के अनुसार किशोरावस्था पहचान बनाम भूमिका भ्रम का चरण है। इस अवस्था में विद्यार्थी अपनी क्षमताओं, रुचियों और भविष्य की भूमिकाओं को समझने का प्रयास करता है। इसलिए सामाजिक-मनोवैज्ञानिक परिस्थितियाँ उसकी रुचियों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

पारिवारिक वातावरण और विद्यार्थियों की रुचि

परिवार बालक के सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक विकास का प्रथम और सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है। माता-पिता की शिक्षा, पारिवारिक संबंध, अभिभावकीय समर्थन, संवाद की गुणवत्ता तथा बच्चों के प्रति अपेक्षाएँ उनकी रुचियों को प्रभावित करती हैं।

सकारात्मक पारिवारिक वातावरण विद्यार्थियों में जिज्ञासा, आत्मविश्वास और स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता विकसित करता है। जिन परिवारों में बच्चों को विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने के अवसर मिलते हैं, उनमें शैक्षिक, कलात्मक और खेलकूद संबंधी रुचियों का व्यापक विकास देखने को मिलता है। इसके विपरीत अत्यधिक नियंत्रणात्मक या संघर्षपूर्ण पारिवारिक वातावरण विद्यार्थियों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति और रुचियों के विकास को बाधित कर सकता है।

आत्मनिर्धारण सिद्धांत के अनुसार स्वायत्तता, योग्यता और संबंध की अनुभूति व्यक्ति की आंतरिक अभिप्रेरणा को बढ़ाती है। अतः परिवार द्वारा विद्यार्थियों को स्वायत्तता और भावनात्मक सहयोग प्रदान करना उनकी रुचियों को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है।

विद्यालयी वातावरण का प्रभाव

विद्यालय विद्यार्थियों की रुचियों के विकास का दूसरा प्रमुख सामाजिक संस्थान है। शिक्षक का व्यवहार, शिक्षण पद्धति, पाठ्यक्रम, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ तथा विद्यालय की समग्र संस्कृति विद्यार्थियों की रुचियों को प्रभावित करती है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double- Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 4, July 2026 Impact Factor: 8.2

जब शिक्षण प्रक्रिया छात्र-केंद्रित, अनुभवात्मक और सहभागितापूर्ण होती है, तब विद्यार्थियों की विषयगत रुचि बढ़ती है। दूसरी ओर केवल परीक्षा और अंक-केंद्रित शिक्षण विद्यार्थियों की आंतरिक रुचि को कम कर सकता है। शिक्षक यदि विद्यार्थियों की व्यक्तिगत क्षमताओं को पहचानते हैं और उन्हें प्रोत्साहित करते हैं, तो छात्र अपनी रुचियों के प्रति अधिक आत्मविश्वास विकसित करते हैं।
विद्यालय में खेल, कला, संगीत, विज्ञान क्लब, वाद-विवाद और सांस्कृतिक गतिविधियों की उपलब्धता भी विद्यार्थियों की बहुआयामी रुचियों को विकसित करने में सहायक होती है।

सहपाठी समूह का प्रभाव

किशोरावस्था में सहपाठी समूह का प्रभाव अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। विद्यार्थी अपने मित्रों के व्यवहार, पसंद और सामाजिक मानदंडों से प्रभावित होते हैं। सहपाठी समूह विद्यार्थियों को नई गतिविधियों और रुचियों से परिचित कराता है।
सकारात्मक मित्र समूह विद्यार्थियों को खेलकूद, अध्ययन, सांस्कृतिक गतिविधियों और सामाजिक सेवा की ओर प्रेरित कर सकता है। इसके विपरीत नकारात्मक समूह दबाव विद्यार्थियों को ऐसी गतिविधियों की ओर आकर्षित कर सकता है जो उनकी शैक्षिक प्रगति के लिए लाभकारी नहीं होतीं। इसलिए सहपाठी संबंधों की गुणवत्ता रुचियों के निर्माण में महत्वपूर्ण सामाजिक-मनोवैज्ञानिक कारक है।

आत्म-अवधारणा और रुचि

आत्म-अवधारणा व्यक्ति की स्वयं के प्रति धारणा है। विद्यार्थी स्वयं को किसी विषय, गतिविधि या क्षमता के संदर्भ में कैसे देखते हैं, यह उनकी रुचि को प्रभावित करता है। यदि कोई छात्र स्वयं को गणित में सक्षम मानता है, तो गणित एवं विज्ञान संबंधी गतिविधियों में उसकी रुचि बढ़ने की संभावना होती है।
सकारात्मक आत्म-अवधारणा शैक्षिक उपलब्धि और प्रेरणा से संबंधित है। जिन विद्यार्थियों में सकारात्मक आत्म-धारणा होती है, वे चुनौतीपूर्ण गतिविधियों में भाग लेने के लिए अधिक तैयार रहते हैं।

आत्म-प्रभावकारिता और रुचि

आत्म-प्रभावकारिता को व्यक्ति के उस विश्वास के रूप में परिभाषित किया जिसके आधार पर वह किसी कार्य को सफलतापूर्वक करने की अपनी क्षमता का मूल्यांकन करता है। विद्यार्थियों की आत्म-प्रभावकारिता उनकी रुचियों और विषय चयन को प्रभावित करती है।
उच्च आत्म-प्रभावकारिता वाले विद्यार्थी कठिन कार्यों को चुनौती के रूप में स्वीकार करते हैं। इसके विपरीत कम आत्म-प्रभावकारिता वाले विद्यार्थी उन क्षेत्रों से दूर रह सकते हैं जिनमें असफलता की संभावना उन्हें अधिक महसूस होती है। इस प्रकार आत्म-प्रभावकारिता और रुचि के बीच परस्पर संबंध पाया जाता है।

अभिप्रेरणा और रुचि का संबंध

अभिप्रेरणा विद्यार्थियों के व्यवहार को दिशा और ऊर्जा प्रदान करती है। आंतरिक अभिप्रेरणा विशेष रूप से रुचि के विकास में महत्वपूर्ण है। जब विद्यार्थी किसी गतिविधि को आनंद और संतोष के लिए करते हैं, तो उनकी रुचि अधिक स्थायी होती है।
स्वायत्तता और व्यक्तिगत अर्थ की अनुभूति आंतरिक अभिप्रेरणा को बढ़ाती है। विद्यालयों में विद्यार्थियों को विकल्प, रचनात्मक अवसर और सक्रिय सहभागिता प्रदान करने से उनकी रुचियों का विकास किया जा सकता है।

सामाजिक-आर्थिक स्थिति का प्रभाव

सामाजिक-आर्थिक स्थिति विद्यार्थियों को उपलब्ध संसाधनों और अवसरों को प्रभावित करती है। उच्च सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों को पुस्तकें, डिजिटल संसाधन, कोचिंग, खेल सुविधाएँ तथा सांस्कृतिक अवसर अपेक्षाकृत अधिक उपलब्ध हो सकते हैं।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double- Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 4, July 2026 Impact Factor: 8.2

हालाँकि सामाजिक-आर्थिक स्थिति ही रुचि का एकमात्र निर्धारक नहीं है। प्रेरणा, पारिवारिक समर्थन और विद्यालयी संसाधन भी महत्वपूर्ण हैं। निम्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थी उचित अवसर मिलने पर विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट रुचि और उपलब्धि प्रदर्शित कर सकते हैं।

व्यक्तित्व का प्रभाव

व्यक्तित्व के गुण भी रुचियों को प्रभावित करते हैं। बहिर्मुखी विद्यार्थी सामाजिक और नेतृत्व संबंधी गतिविधियों में अधिक रुचि प्रदर्शित कर सकते हैं, जबकि अंतर्मुखी विद्यार्थी साहित्यिक, बौद्धिक या व्यक्तिगत गतिविधियों की ओर अधिक आकर्षित हो सकते हैं।

व्यावसायिक रुचि सिद्धांत में रुचियों और व्यक्तित्व के बीच घनिष्ठ संबंध बताया गया है। विद्यार्थी की व्यक्तित्व विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए करियर मार्गदर्शन प्रदान करना अधिक प्रभावी हो सकता है।

भावनात्मक समायोजन और रुचि

भावनात्मक रूप से संतुलित विद्यार्थी विभिन्न गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए अधिक तैयार रहते हैं। चिंता, तनाव, असुरक्षा और भय रुचि के विकास को प्रभावित कर सकते हैं। सकारात्मक भावनात्मक वातावरण विद्यार्थियों में जिज्ञासा और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करता है।

विद्यालयी परामर्श सेवाएँ और शिक्षक समर्थन विद्यार्थियों के भावनात्मक समायोजन को बेहतर बना सकते हैं। इससे उनकी शैक्षिक तथा अन्य रचनात्मक गतिविधियों में रुचि बढ़ने की संभावना होती है।

लिंग और रुचि क्षेत्र

लिंग संबंधी सामाजिक अपेक्षाएँ भी विद्यार्थियों की रुचियों को प्रभावित करती हैं। पारंपरिक रूप से कुछ विषयों और व्यवसायों को लड़कों या लड़कियों के लिए उपयुक्त माना जाता रहा है। ऐसी धारणाएँ विद्यार्थियों की वास्तविक रुचियों और विकल्पों को सीमित कर सकती हैं।

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में समान अवसर और लैंगिक संवेदनशीलता आवश्यक है, ताकि विद्यार्थी अपनी वास्तविक क्षमता और रुचि के आधार पर विषय एवं करियर का चयन कर सकें।

डिजिटल और सोशल मीडिया का प्रभाव

वर्तमान समय में डिजिटल तकनीक और सोशल मीडिया किशोरों की रुचियों को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक बन गए हैं। ऑनलाइन वीडियो, शैक्षिक प्लेटफॉर्म, गेमिंग, सोशल नेटवर्क और डिजिटल समुदाय विद्यार्थियों को नए ज्ञान और गतिविधियों से परिचित कराते हैं।

डिजिटल माध्यम विद्यार्थियों में तकनीकी, रचनात्मक और व्यावसायिक रुचियों को बढ़ा सकते हैं। साथ ही अत्यधिक डिजिटल उपयोग ध्यान, अध्ययन और प्रत्यक्ष सामाजिक गतिविधियों पर नकारात्मक प्रभाव भी डाल सकता है। इसलिए संतुलित डिजिटल उपयोग आवश्यक है।

तालिका 1: छात्रों की रुचि के क्षेत्रों पर प्रमुख सामाजिक-मनोवैज्ञानिक चरों का प्रभाव

क्र. सं.	सामाजिक-मनोवैज्ञानिक चर	रुचि के प्रभावित क्षेत्र	संभावित प्रभाव
1	पारिवारिक वातावरण	शैक्षिक, सांस्कृतिक, व्यावसायिक	सकारात्मक समर्थन से रुचि का विकास
2	विद्यालयी वातावरण	अध्ययन, खेल, कला, विज्ञान	सहभागिता और प्रेरणा में वृद्धि
3	सहपाठी समूह	सामाजिक, खेलकूद, मनोरंजन	सकारात्मक या नकारात्मक प्रभाव
4	आत्म-अवधारणा	शैक्षिक एवं विषयगत रुचि	आत्मविश्वास बढ़ने से रुचि बढ़ती है
5	आत्म-प्रभावकारिता	विज्ञान, गणित, तकनीकी क्षेत्र	चुनौतीपूर्ण कार्यों में भागीदारी

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double- Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 4, July 2026 Impact Factor: 8.2

6	उपलब्धि अभिप्रेरणा	शैक्षिक एवं व्यावसायिक क्षेत्र	लक्ष्य-उन्मुख रुचि का विकास
7	सामाजिक-आर्थिक स्थिति	तकनीकी, सांस्कृतिक, शैक्षिक	संसाधनों की उपलब्धता से अवसर बढ़ते हैं
8	व्यक्तित्व	सामाजिक, कलात्मक, नेतृत्व	व्यक्तिगत प्रवृत्तियों के अनुसार रुचि
9	भावनात्मक समायोजन	सभी प्रमुख क्षेत्र	संतुलन से सक्रिय सहभागिता
10	डिजिटल वातावरण	तकनीकी, मनोरंजन, रचनात्मक	नई रुचियों का विस्तार

तालिका 2: प्रमुख अध्ययनों की समीक्षा

लेखक/वर्ष	अध्ययन का प्रमुख विषय	मुख्य निष्कर्ष
एरिकसन (1968)	मनोसामाजिक विकास	किशोरावस्था पहचान निर्माण की महत्वपूर्ण अवस्था है
बंडुरा (1997)	आत्म-प्रभावकारिता	क्षमता में विश्वास कार्य चयन और रुचि को प्रभावित करता है
हॉलैंड (1997)	व्यक्तित्व एवं रुचि	व्यक्तित्व और रुचि के बीच संबंध पाया गया
डेसी और रयान (2000)	आत्मनिर्धारण	स्वायत्तता और प्रेरणा रुचि विकास में महत्वपूर्ण हैं
हिदी और रेनिंगर (2006)	रुचि विकास	रुचि एक क्रमिक और गतिशील प्रक्रिया है
मार्श एंड क्रेवेन (2006)	आत्म-अवधारणा	सकारात्मक आत्म-अवधारणा उपलब्धि को बढ़ाती है
रयान और डेसी (2020)	प्रेरणा	सहायक वातावरण आंतरिक प्रेरणा को प्रोत्साहित करता है

III. चर्चा

उपलब्ध साहित्य के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि हाई स्कूल के विद्यार्थियों की रुचियाँ बहुआयामी होती हैं और उन पर एक ही कारक का प्रभाव नहीं पड़ता। पारिवारिक वातावरण विद्यार्थियों के प्रारंभिक मूल्यों और आकांक्षाओं को प्रभावित करता है, जबकि विद्यालयी वातावरण उनकी क्षमताओं और रुचियों को व्यवस्थित रूप से विकसित करने का अवसर प्रदान करता है।

मनोवैज्ञानिक कारकों में आत्म-अवधारणा और आत्म-प्रभावकारिता विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। यदि विद्यार्थी स्वयं को किसी क्षेत्र में सक्षम समझता है, तो उस क्षेत्र के प्रति उसकी रुचि बढ़ सकती है। इसके साथ ही सहपाठी समूह सामाजिक स्वीकृति और समूह व्यवहार के माध्यम से रुचियों को प्रभावित करता है।

अतः विद्यार्थियों की रुचियों को समझने के लिए केवल शैक्षिक उपलब्धि को आधार नहीं बनाया जा सकता। सामाजिक संबंधों, पारिवारिक परिस्थितियों, भावनात्मक स्थिति, व्यक्तित्व और प्रेरणा को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

IV. निष्कर्ष

प्रस्तुत समीक्षा अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि हाई स्कूल के छात्रों की रुचि के क्षेत्रों पर सामाजिक-मनोवैज्ञानिक चरों का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। पारिवारिक वातावरण, विद्यालयी वातावरण, सहपाठी समूह, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, आत्म-अवधारणा, आत्म-प्रभावकारिता, अभिप्रेरणा, व्यक्तित्व तथा भावनात्मक समायोजन विद्यार्थियों की रुचियों की दिशा और प्रकृति को प्रभावित करते हैं।

सकारात्मक और सहयोगात्मक वातावरण विद्यार्थियों को अपनी रुचियों की पहचान करने तथा उन्हें विकसित करने के अवसर प्रदान करता है। इसके विपरीत नकारात्मक सामाजिक दबाव, सीमित संसाधन और कम आत्मविश्वास रुचियों के विकास में बाधा उत्पन्न कर सकते हैं। इसलिए परिवार, विद्यालय और समाज को मिलकर ऐसा वातावरण तैयार करना चाहिए जिसमें विद्यार्थियों को स्वतंत्रता, प्रोत्साहन, संसाधन और उचित मार्गदर्शन प्राप्त हो।

संदर्भ सूची

1. बंडुरा, ए. (1997). आत्म-प्रभावकारिता: नियंत्रण का अभ्यास। डब्ल्यू. एच. फ्रीमैन।
2. डेसी, ई. एल., और रयान, आर. एम. (2000). लक्ष्य प्राप्ति का "क्या" और "क्यों": मानवीय आवश्यकताएँ और व्यवहार का आत्म-निर्धारण। मनोवैज्ञानिक पूछताछ, 11(4), 227–268।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double- Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 4, July 2026
Impact Factor: 8.2

3. एरिकसन, ई. एच. (1968). पहचान: युवावस्था और संकट। डब्ल्यू. डब्ल्यू. नॉर्टन।
4. हिडी, एस., और रेनिंगर, के. ए. (2006). रुचि विकास का चार-चरण मॉडल। शैक्षिक मनोवैज्ञानिक, 41(2), 111–127।
5. हॉलैंड, जे. एल. (1997). व्यावसायिक विकल्प चुनना: व्यावसायिक व्यक्तित्व और कार्य वातावरण का एक सिद्धांत। मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन संसाधन।
6. लेंट, आर. डब्ल्यू., ब्राउन, एस. डी., और हैकेट, जी. (1994). करियर और शैक्षणिक रुचि, चयन और प्रदर्शन के एक एकीकृत सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांत की ओर। जर्नल ऑफ वोकेशनल बिहेवियर, 45(1), 79–122।
7. मार्श, एच. डब्ल्यू., और क्रेवन, आर. जी. (2006)। आत्म-अवधारणा और प्रदर्शन के पारस्परिक प्रभाव। पर्सपेक्टिव्स ऑन साइकोलॉजिकल साइंस, 1(2), 133–163।
8. रयान, आर. एम., और डेसी, ई. एल. (2020)। आत्म-निर्धारण सिद्धांत: प्रेरणा, विकास और कल्याण में बुनियादी मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएं। गिलफोर्ड प्रेस।